बैठने को कमरे नहीं, बड़ोली में संस्कृति मॉडल स्कूल घोषित

फ़रीदाबाद (म.मो.) मात्र सात जर्जर कमरों में चल रहे गांव बड़ौली के हाईस्कूल को वरिष्ठ माध्यमिक एवं मॉडल संस्कृति स्कूल का दर्जा दे दिया गया। यह दर्जा देने के लिये स्वयं शिक्षा मंत्री कंवरपाल पिछले दिनों यहां आये थे। बारहवीं तक का स्कूल, कमरे केवल सात, वे भी जर्जर हालत में, है न गजब खट्टरशाही! इतना ही नहीं गजब तो यहां संस्कृति मॉडल के नाम पर 500 रुपये फ़ीस लगा कर और भी कर दिया गया। यह गांव सेक्टर 9 के पूर्व में नहर पार बसा हुआ है। यह स्कूल 1901 में स्थापित किया गया था। उस वक्त यह चौथी जमात तक ही था। अब यहां पर एक प्राईमरी स्कूल लड़कों के लिए, एक लड़कियों के लिए तथा एक लड़के एवं लड़कियों का (सहशिक्षा वाला) वरिष्ठ माध्यमिक स्कूल बना दिया गया है। इनमें शिक्षकों की संख्या 25 है जबकि छात्रों की संख्या करीब 1000। यहां न तो विज्ञान, गणित व अंग्रेजी पढ़ाने वाले शिक्षक हैं और जब छात्रों को बैठने के लिये ही कोई इमारत नहीं तो विज्ञान की प्रयोगशालाओं का तो प्रश्न ही नहीं उठता।

मौजूद कमरों में से दो तो इस लायक भी नहीं कि उनमें सामान भरा जा सके, शेष पांच कमरों में स्कूल का सारा सामान भरा हुआ है। यानि उन्हें कबाड़खाना बनाकर बंद कर दिया गया है। लिहाजा

तमाम छात्र खुले मैदान में बैठकर पढ़ने को मजबूर है।

बच्चों की समस्याओं को लेकर ग्रामीण, अभिभावक, ज़िला शिक्षा अधिकारी मुनीष चौधरी से मिलने उनके कार्यालय सेक्टर 16 कई बार गये, लेकिन वे कभी नहीं मिली। अव्वल तो वे दफ्तर आती ही नहीं और जब आती भी हैं तो कमरा बंद करके तीन-तीन घंटे लंच करती रहती हैं। पहले से ही दुखियारे ग्रामीणों को मुनीष के इस दुर्व्यवहार ने इस कदर भड़का दिया कि उन्होंने दिनांक 5 दिसम्बर को अपने स्कूल में ताला जड़ दिया। बस फिर क्या था, क्षेत्र के विधायक राजेश नागर, पूर्व विधायक ललित नागर तथा अन्य नेतागण स्कूल में जा पहुंचे तो मुनीष भी लंच-वंच छोड़कर दौड़ी-दौड़ी स्कूल पहुंची। जिन लोगों से मिलने की फुर्सत उन्हें अपने दफ्तर में नहीं थी, अब उनके दरबार में जा पहुंची। वहां विधायक राजेश नागर ने तो जो फटकार मुनीष पर लगाई सो लगाई, ग्रामीणों ने भी खरी-खोटी सुनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी।

विकास एवं शिक्षा स्तर को ऊंचा करने का दावा करने वाली खट्टर सरकार के दावों की पोल खोलता यह अकेला स्कूल नहीं है। राज्य के लगभग सभी स्कूल, विशेष कर ग्रामीण क्षेत्रों के स्कूलों की यही दुर्दशा है। यह सब धनाभाव के चलते नहीं बल्कि ब्यापक भ्रष्टाचार के चलते है। जिले भर में स्कूलों के रख-रखाव एवं भवन निर्माण के लिये करोड़ों रुपये इस वर्ष डकारे जा चुके हैं और करीब दो से तीन करोड़ अभी डकारे जाने शेष है। इन हालात में बच्चे यदि सरकारी स्कूल न छोड़ें तो क्या करें? स्कूल छोड़ने पर खट्टर कहते हैं कि बच्चे ही नहीं रहे तो स्कूल की क्या जरूरत है?

ओल्ड फरीदाबाद रेलवे अंडरपास की जल निकासी योजना बनेगी

फरीदाबाद (म.मो.) फरीदाबाद शहर की जनता के आवागमन को सुविधाजनक बनाने एवं लम्बा चक्कर काटने से बचाने के लिये यहां तीन रेलवे अंडरपास हैं। जरा सी बारिश होने पर ये सभी अंडरपास पानी में डूब जाते हैं। कई बार तो दुर्घटनायें हुई और कई बार होते-होते बची। दिमाग से पैदल एवं रिश्वतखोर प्रशासक तथा अनपढ़ इंजीनियर कभी भी इनके जलभराव से निपटने का कोई स्थायी हल नहीं ढूंढ पाये।

यदि अक्ल से पैदल और बेईमान न होते तो प्रत्येक अंडरपास के नीचे एक अच्छा बड़ा रेन हार्वेस्टिंग सिस्टम बनाने के साथ-साथ पम्पिंग सेट भी लगा सकते थे जिसे जरूरत पड़ने पर चलाया जा सकता। लेकिन ऐसे कोई काम करना तो ये लोग जानते ही नहीं जिससे शहरवासियों को कोई लाभ हो सके। अब, मीडिया में प्रकाशित समाचारों में बताया जा रहा है कि इसके निकासी के लिये आठ किलो मीटर दूर इसे गुड़गांव नहर से जोड़ा जायेगा। जल निकासी होगी या नहीं, यह तो समय ही बतायेगा लेकिन इस योजना के द्वारा सैंकड़ों करोड़ की चपत जरूर कर दाता को लग जायेगी।

ग्रीन फील्ड कॉलोनी को जोड़ने वाला सबसे पुराना अंडरपास, तो हमेशा ही उस क्षेत्र की जनता के लिये भारी मुसीबत बना रहा है। सबसे अधिक दुर्घटनायें भी इसी अंडरपास पर हुई है। इसकी जल निकासी के लिये सवयं मुख्यमंत्री खट्टर ने कई बार यहां के लोगों को आश्वस्त भी किया था

लेकिन हालात हमेशा जस के तस ही रहे। दरअसल जल निकासी हेतु पम्पिंग सेट तो सभी अंडरपासों पर लगे हैं लेकिन कुप्रबन्धन के चलते ये हमेशा बेकार ही साबित हुए हैं।

ग्रीन फील्ड वाले इस अंडरपास का समाधान तो बहुत ही सरल है जिसे '**मज़दूर मोर्चा**' कई बार लिख चुका है। इस अंडरपास के बिल्कुल निकट से बुढिया नाला चलता है। अंडरपास को इस नाले से जोड़ दिया जाये तो जल निकासी स्वत: हो सकती है। इसके लिये बमुश्किल 50 मीटर की पाइप लाइन डालनी होगी। लेकिन यह बात तो उसी अधिकारी के दिमाग में आ सकती है जिसे जनता के दुख-दर्द से कोई लेना-देना हो।

समझा जा रहा है कि अब यह काम एफएमडीए अपने हाथ में लेने जा रहा है। समय ही बतायेगा कि इन के इंजीनियर एमसीएफ तथा 'हूडा' के इंजीनियरों से कितने बढिया पढ़े-लिखे तथा ईमानदार हैं।

एनआईटी क्षेत्र में 160 करोड़ की लागत से नई सीवर लाइन की योजना

फ़रीदाबाद (म.मो.) 1960 के दशक में डाली गई सीवर लाइन को अब कंडम घोषित कर दिया गया है। शहर भर में जगह-जगह सीवर लाइन जाम रहने से गलियों में सड़ा हुआ सीवेज बहते देखा जा सकता है। उस वक्त डाली गई सीवर लाइन शहर के नियोजित विकास के अनुसार बनाई गई थी। उस वक्त के योजनाकारों को मालुम नहीं था कि शहर में असली आबादी से कहीं अधिक अवैध कब्जेधारियों की हो जायेगी। दो या तीन मंजिला मकानों की जगह पांच व छः मंजिला मकान बन जायेंगे।

शहर को बसाने वाले योजनाकारों ने जो सड़कें 200-200 फुट चौड़ी रखी थी, वे अब 100 फीट की भी नहीं रह गई हैं। इसी तरह 100 फीट वाली 50 फीट भी नहीं बची। इसी के चलते सड़कों पर जाम रहता है। यही स्थिति सीवर लाइन के साथ भी बनी हुई है। यदि शहर का विकास योजनाबद्ध तरीके से किया जाये तो न सीवर जाम होते और न ही सड़कें।

विदित है कि सीवर लाइन कोई 40-50 साल के लिये नहीं बनाई जाती। लंदन शहर की सीवर लाइन 150 वर्ष से भी अधिक पुरानी है और अगले 150 वर्ष तक भी उसका कुछ बिगड़ता नजर नहीं आ रहा। यहां एनआईटी की बात तो छोड़िये, नवनिर्मित 'हूडा' सेक्टरों की सीवर लाइन का भी बुरा हाल है। कारण एक ही है, इन्तहा दर्जे का भ्रष्टाचार।

छोटी व बड़ी सीवर लाइनों के जरिये सीवेज को डिस्पोजल तक पहुंचाया जाता है। वहीं पर एसटीपी (सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट) लगाये गये हैं। वास्तव में न तो डिस्पोजल तक पूरा सीवेज पहुंच पाता है और न ही एसटीपी ढंग से काम कर पाते हैं। लिहाजा अधिकांश सीवेज गलियों में बहता देखा जा सकता है।

इस समस्या के उपाय के तौर पर नई व्यवस्था में सीवेज को डिस्पोजल व बड़े एसटीपी तक ले जाने की अपेक्षा गली-मुहल्लों के आस-पास ही पार्कों में छोटे एसटीपी लगा कर पानी को वहीं पार्कों में छोड़ दिया जायेगा। जो लोग नगर निगम, 'हूडा' अथवा एफएमडीए वालों की दक्षता एवं कार्यकुशलता से परिचित हैं, वे समझ सकते हैं कि छोटे एसटीपी कैसा काम करेंगे और गली-मुहल्ले किस तरह से सड़ा करेंगे। बहरहाल जो होना होगा वो होगा लेकिन 160 करोड़ के बजट से तमाम अधिकारियों व कर्मचारियों के वारे-न्यारे जरूर हो जायेंगे।

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक सतीश कुमार ने अपने स्वामित्व में एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सैक्टर-6, नोएडा से मुद्रित करवा कर 708 सैक्टर-14 फरीदाबाद से प्रकाशित किया।